

ONE DAY BIBLE STUDY PROGRAM

Zion Prayer Fellowship, Chanamunda, Dist: Nuapada, Date: 05 April 2025

Speaker: Ps. Sahadev Nanda

कलीसिया की संगति का महत्व

इस संसार के लोगों के लिए कलीसिया केवल एक इमारत हो सकती है, जिसे वे ईसाईयों का मंदिर मानते हैं। परन्तु सच्चाई के प्रकाश में यह परिभाषा पूर्णतः फीकी और अधूरी प्रतीत होती है, क्योंकि वास्तव में कलीसिया कोई भवन या मूर्ति से सुसज्जित मंदिर नहीं है, बल्कि यह जीवित परमेश्वर का शरीर है, जिसका नेतृत्व स्वयं प्रभु यीशु मसीह करते हैं।

क्योंकि प्रेरित पौलुस इफिसियों 5:23 में कहते हैं:

"मसीह कलीसिया का सिर है; और वही देह का उद्धारकर्ता है।"

अर्थात् मसीह ही वह जीवन हैं जिसके द्वारा कलीसिया नाम की देह जीवित रहती है।

इस एक वाक्य से ही स्पष्ट हो जाता है कि कलीसिया में यीशु का क्या स्थान है—वह सिर हैं, और सिर के बिना देह जीवित नहीं रह सकती।

अतः हम इस पर नहीं, बल्कि इस पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि कलीसिया की देह कौन है, और उस देह की क्या भूमिका है।

देह कौन है और उसे कैसा होना चाहिए, यह भी परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस के माध्यम से हमें स्पष्ट रूप से बताया है।

क्योंकि पौलुस कहते हैं:

"हम जो बहुत हैं, एक ही देह हैं" — 1 कुरिन्थियों 10:17

यहाँ वह उसी देह की बात कर रहे हैं जिसका सिर स्वयं यीशु मसीह हैं,

अर्थात् हम ही कलीसिया की देह हैं।

हम अपने आप देह नहीं बन गए,

बल्कि हम एक देह बनने के लिए उस माध्यम से जोड़े गए जिसका उल्लेख 1 कुरिन्थियों 12:13 में है:

"क्योंकि हम सब ने—क्या यहूदी, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र—एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।"

परमेश्वर चाहता है कि हम एकजुट होकर उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह की संगति में रहें, यही हमारा पहला बुलावा है।

क्योंकि आत्मा से परिपूर्ण प्रेरित पौलुस कहते हैं:

"परमेश्वर सच्चा है; जिसने तुम्हें अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है।" — 1 कुरिन्थियों 1:9

अतः हमें जानना चाहिए कि हम कलीसिया में क्यों एकत्र होते हैं—
ना तो अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने,
ना अपनी प्रतिभा दिखाने,
ना अपनी धार्मिकता पर गर्व करने,
और ना ही अपनी पवित्रता का प्रचार करने।

हम इसलिए एकत्र होते हैं क्योंकि *हम एक ही देह हैं*,
और हमें *अपने सिर—मसीहा की संगति* में आना है।
क्योंकि वही हैं जिन्होंने हमें इस देह में जोड़ा है,
जैसा कि लिखा है:

"परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक करके देह में रखा है।" — 1 कुरिन्थियों 12:18

इससे हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम अपनी इच्छा से कलीसिया में नहीं जुड़ गए हैं,
बल्कि मसीह ने हमें बड़ी सावधानी और उद्देश्य से जोड़ा है।
और यदि उसने मुझे जोड़ा है,
तो मैं यह भी जानूँ कि उसी मसीह ने मेरे अन्य भाई-बहनों को भी जोड़ा है,
जो मेरी ही कलीसिया में हैं।

इसलिए जब वे प्रभु की दृष्टि में बहुमूल्य हैं,
तो वे मेरी दृष्टि में भी उतने ही अनमोल होने चाहिए।
मुझे उन्हें *आदर और सम्मान के साथ अपनाना चाहिए*,
और कभी यह घमंड नहीं करना चाहिए कि मैं मसीह के शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग हूँ और कोई अन्य निर्बल अंग है।

क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में *सबकी कीमत एक समान है*।
एक देह के लिए *कान, नाक और आँखें*—तीनों ही आवश्यक हैं।

इसलिए हमें न तो किसी को कमजोर समझना चाहिए,
और न ही किसी को तुच्छ जानना चाहिए।
बल्कि यदि कोई अंग निर्बल प्रतीत होता है,
तो उसे *अधिक सम्मान* देना चाहिए ताकि वह सुदृढ़ हो सके।
यही हमारा कर्तव्य है।

पौलुस इसी सत्य को स्पष्ट करते हैं:

"यदि सब एक ही अंग होते, तो देह कहाँ होती? अब अंग तो बहुत हैं, परन्तु देह एक ही है। आँख हाथ से नहीं कह सकती कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं, और न सिर पाँवों से कह सकता है कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं। परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं।"

"...परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो, ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक-दूसरे की बराबर चिन्ता करें। यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।"

— 1 कुरिन्थियों 12:18-27

आज कलीसिया में जो मतभेद और ईर्ष्या उत्पन्न होती है,
उसका कारण यही है कि हम इस सिद्धांत का पालन नहीं करते।

इसलिए यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि जैसे हम अपने घरों में बच्चों को संस्कार सिखाते हैं,
वैसे ही हम अपनी कलीसिया में भी सभी को प्रेमपूर्वक सिखाएं
कि हम सभी एक ही देह के भिन्न-भिन्न अंग हैं
और हमें एक-दूसरे की मदद करनी है।

क्योंकि मुँह देख नहीं सकता, आँख खा नहीं सकती,
पेट चल नहीं सकता और पैर सुन नहीं सकते।
परन्तु यदि ये सभी अपने-अपने कार्य सही ढंग से करें,
तो सम्पूर्ण शरीर मज़बूत बनेगा,
और हमारे देह का सिर—प्रभु यीशु मसीह—गौरव से ऊँचा होगा।

आमीन।

धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture
Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha
Date: 5th April 2025
Contact: sks.officeuse@gmail.com

I sincerely thank our respected Pastor, Ps. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

With gratitude,
Sonu Kumar Saha